B- III
L- 07
MIH

सहायक सन्धि

नोट -

- महत्व में सकारात्मक पहलू का उल्लेख करें।
- परिणाम / प्रभाव में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू पर उल्लेख करें।

प्र० ब्रिटिश भारत में सहायक संधि की नीति क्या थी? वेलेजली ने किस - किस राज्यों से सन्धि की। इससे अंग्रेजों को क्या लाभ हुआ।

"सहायक सन्धि प्रणाली बकरे को तब तक खिला पिला कर रखने की प्रथा जब तक वो जिबह / बलि के योग्य न हो जाये"

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आंग्ल-मराठा युद्ध

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध -(1775 - 1782) :-

- 1772 में पेशवा माधव राव की मृत्यु के पश्चात् रघुनाथ राव पेशवा बनना चाहते थे लेकिन माधवराव के पुत्र नरायण राव को पेशवा बनाया गया नरायणराव की शीघ्र मृत्यु हो गई इसके पश्चात माधवराव द्वितीय को पेशवा बनाया गया।
- 1775 ई. में रघुनाथ राव ने अंग्रेजों के बाम्बे परिषद से पेशवा बनने के लिए सूरत की सन्धि की।
- इस सन्धी के पश्चात मराठों से युद्ध प्रारम्भ हुआ लेकिन वारेन हेस्टिंग्स मराठों से युद्ध नही चाहते थे।
- इस उद्देश्य से 1776 में पेशवा के साथ <u>पुरन्दर की सन्धी</u> की गई।
- कम्पनी के डायरेक्टरों के निर्देश पर मराठो से युद्ध करना पड़ा।
- अंतत: 1782 में सालबई की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ (बराबरी पर युद्ध समाप्त हुआ)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1805):-

कारण :-

- कम्पनी की महत्वाकांक्षा (मैसूर युद्ध के पश्चात)
- नेपोलियन की आक्रामक नीति, वेलेजली की प्राथमिकता थी भारतीय साम्राज्य को सुरक्षित रखना।
- मराठों की आन्तरिक परिस्थितियाँ जैसे- पेशवा पर प्रभाव को लेकर सिंधिया एवं होलकर के बीच संघर्ष। (पेशवा, बाजीराव II)
  इसी क्रम में होलकर शासक के भाई की हत्या कर दी गई। प्रतिक्रिया स्वरूप होलकर ने पूना पर कब्जा कर लिया।
- पेशवा ने अंग्रेजों से मदद माँगी और 1801 ई. में बसीन या बसई की सहायक सन्धि पर हस्ताक्षर किया। एक प्रकार से पेशवा ने मराठों की संप्रभुता को गिरवी रख दिया। मराठा सरदारों ने अंग्रेजो को चुनौती दी।

परिणाम :-

- मराठों की पराजय हुई 1803 ई. में अंग्रेजों ने भोंसले से देवगांव की सन्धि की और सिंधिया से सुरजीअर्जन गाँव की सन्धि की।

• 1804-1805 ई० में होल्कर से युद्ध हुआ और 1805 में राजपुर घाट की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18) :-

लार्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

• पेशवा ने युद्ध की शुरूआत की, अलग-अलग लड़ाईयों में पेशवा, भोंसले, सिंधिया की पराजय हुई।

• पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया, पेशवा को पेंशन दिया गया और कानपुर के नजदीक रहने के लिए बिठूर नामक स्थान दिया।

• सतारा में मराठों का एक छोटा सा राज्य स्थापित किया गया और शिवाजी के वंशज को शासक बनाया गया।

• तीसरे युद्ध से पूर्व लार्ड हेस्टिंग्स ने पिंडारियों के विरूद्ध अभियान चलाया। पिण्डारी लुटेरों का दल था जो मराठों के साथ सैनिक अभियान में जाया करते थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

उत्तर पश्चिम में साम्राज्य विस्तार

- अफगान (1839-42) और (1878-79)
- सिंध (1843)
- पंजाब (1849)

- उत्तर पश्चिम में भारत की प्राकृतिक सीमा में दो महत्वपूर्ण राज्य थे, सिंध एवं पंजाब का राज्य। प्राकृतिक सीमा से बाहर अफगानिस्तान एवं ईरान के राज्य थे और अफगानिस्तान की सीमा के नजदीक रूसी प्रभाव का विस्तार हो रहा था तथा यूरोप में ब्रिटेन एवं रूस के बीच शत्रुता थी।
- तृतीय मराठा युद्ध के पश्चात कम्पनी उत्तर पश्चिम में साम्राज्य विस्तार को लेकर सक्रिय हुई।
- साम्राज्य विस्तार को लेकर दो प्रकार के दृष्टिकोण प्रचलित थे (अफगानिस्तान को लेकर)

प्रथम - अफगानिस्तान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया जाए इससे भारतीय राज्यों पर भी पकड़ मजबूत होगी, रूस को भारतीय सीमा से दूर रखने में सफलता मिलेगी।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

मध्य एशिया में व्यापार का विस्तार होगा।

- अफगानिस्तान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति को अग्रगामी नीति भी कहा जाता है
- अफगानिस्तान के साथ दोनो युद्ध इसी नीति का परिणाम था
- प्रथम युद्ध मे अंग्रेजों को काफी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन इसके पश्चात अंग्रेजों ने अफगान नीति में परिवर्तन किया इसे कुशल अकर्मण्यता की नीति कहा जाता है इसके अन्तर्गत अफगानिस्तान से मित्रवत संबंध बनाए रखने पर बल दिया गया। इससे रूस को भारत की सीमा से दूर रखा जा सके।

- प्रथम युद्ध के पश्चात अंग्रेजो की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची तथा रूस का खतरा अभी भी बना हुआ था इसी पृष्ठभूमि में अंग्रेजो ने सिंध एवं पंजाब के विरुद्ध आक्रमक नीति अपनाई।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR